B-2
L-09
Ancient India

यजुर्वेद: यह गद्य और पद्य दोनों में लिखा गया है

* यह अनुष्ठान विषयक संहिता है
* इसकी कई शाखाएं थी, जिसमें कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा और शुक्ल यजुर्वेद की वाजसनेयी संहिता प्रसिद्ध है
* शुक्ल यजुर्वेद में कई प्रकार के यज्ञों जैसे वाजपेय, अश्वमेध, राजसूय, चातुर्मास आदि कई प्रकार के यज्ञों का उल्लेख है
* यजुर्वेद के रुद्राध्याय के अंतर्गत रुद्र के विभिन्न रूपों की चर्चा की गई है
* यजुर्वेद के अंतर्गत पितरों की प्रार्थना की गई है

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

यजुर्वेद
- शुक्ल → शतपथ ब्राह्मण
- कृष्ण → तैत्तिरीय ब्राह्मण

ब्राह्मण

→ इसमें सर्वप्रथम राजा, राज्य, राज्याभिषेक का सिद्धांत आया
→ लघु वेद की संज्ञा

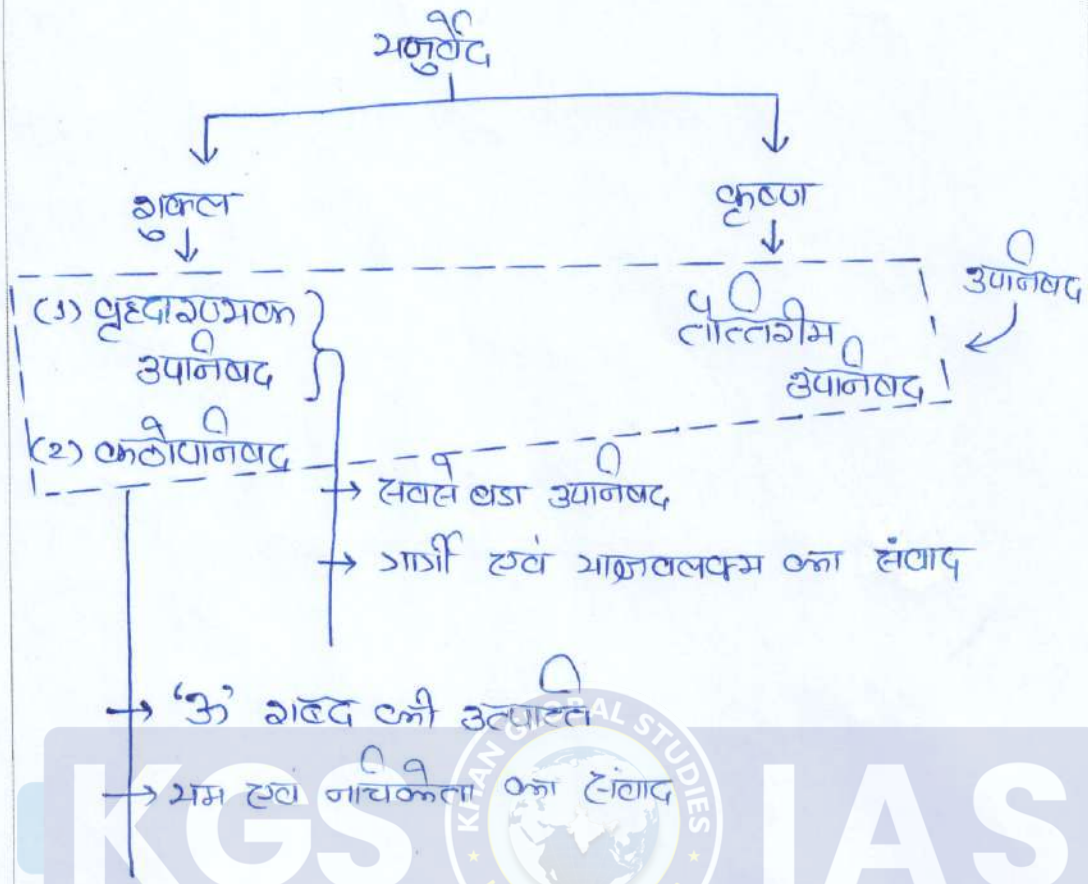

यजुर्वेद

- शुक्ल
  - (1) वृहदारण्यक उपनिषद
    - सबसे बड़ा उपनिषद
    - गार्गी एवं याज्ञवल्क्य का संवाद
  - (2) कठोपनिषद
    - 'ॐ' शब्द की उत्पत्ति
    - यम एवं नाचिकेता का संवाद
- कृष्ण
  - तैत्तिरीय उपनिषद

(उपनिषद)

KGS IAS
KHAN GENERAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

अन्य उपनिषद

a> ईश उपनिषद (ईशोपनिषद) → निष्काम कर्म की बात की गई।

b> श्वेताश्वर उपनिषद → रूद्र देवता को समर्पित

यजुर्वेद का आरण्यक → तैत्तिरीय आरण्यक

* पितृ ऋण
* ऋषि ऋण
* देव ऋण

} तीन ऋणों का उल्लेख → अष्टांगिक मार्ग से मिलता-जुलता संदर्भ इससे मिलता है।

यजुर्वेद का उपवेद → धनुर्वेद

यजुर्वेद का पुरोहित → अध्वर्यु

सामवेद: इसमें यज्ञों के आह्वान हेतु मंत्रों को स्वर प्रदान किया जाता है। इस प्रकार मंत्रों का पाठ नहीं अपितु गायन होता है और यह गायन उद्गाता द्वारा किया जाता है

उद्गाता ↓ सामवेद के पुरोहित

* सामवेद की कौथुम शाखा अधिक लोकप्रिय है।
* सामवेद सूर्य देव को समर्पित है।
* सामवेद में गायत्री मंत्र की व्याख्या की गई।

सामवेद के ब्राह्मण ग्रंथ

- पंचविंश
- षड्विंश
- वंश

पंचविंश or ताण्ड्य

- → सबसे बड़ा ब्राह्मण ग्रंथ
- → इसमें यज्ञीय गीतों का वर्णन है।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform © KHAN SIR ©

सामवेद के उपनिषद

* छान्दोग्य उपनिषद:
  - वासुदेव कृष्ण को देवकी का पुत्र और ऋषि घोर आंगिरस का शिष्य बताया गया है।
  - सर्वप्रथम अद्वैतवाद का वर्णन

* जैमिनीय उपनिषद:

सामवेद का उपवेद – गन्धर्व वेद → नृत्य एवं कला की व्याख्या

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

सामवेद का आरण्यक – छान्दोग्य, जैमिनीय

अथर्ववेद: इसमें यज्ञ से भिन्न विषयों का वृहत संकलन है। बहुत दिनों तक इसे कर्मकांड से पृथक रखा गया था।

* यह वेद त्रयी में शामिल नहीं है। किंतु वैदिक परंपरा में उसे ब्रह्मवेद कहा गया है अर्थात वह ब्रह्मा नामक ऋत्विज के उपयोग के लिए है।

* वस्तुतः अथर्ववेद को अथर्वा आंगिरस वेद कहा जाता था। अर्थात इसके दो ऋषि थे अथर्वा और आंगिरस

* अथर्ववेद में ही सर्वप्रथम लौकिक विषयों को व्यापक महत्व दिया गया है। इसलिए इसके विषय में विविधता मिलती है। प्रायः सभी पक्षों का समावेश है।

* आध्यात्म विद्या, आरोग्य प्राप्ति, गृह सुख, कृषि में वृद्धि, कीट पतंगों का निवारण, वाणिज्य, पितरों की पूजा, शमी वृक्ष से प्रार्थना, पुत्र पिता का अनुयायी हो, माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्या इत्यादि का वर्णन मिलता है।

अथर्ववेद का ब्राह्मण — गोपथ

अथर्ववेद का उपनिषद

→ माण्डूक्य उपनिषद

→ मुण्डकोपनिषद : सत्यमेव जयते

अथर्ववेद का उपवेद — शिल्पवेद

वेदांग

मूल वैदिक साहित्य को समझाने और उसका उपयोग बताने के लिए वेदांग ग्रंथ बने। उपयोगिता की दृष्टि से इन्हें वैदिक साहित्य में ही रखा जाता है यह प्रायः सूत्रात्मक है। वैदिक साहित्य वैदिक संस्कृत में है पर वेदांग लौकिक संस्कृत में है।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

वेदांग 6 हैं।

1.) शिक्षा - यह उच्चारण का विज्ञान है। इनको प्रातिशाख्य कहा जाता है।

2) कल्प - यह वैदिक कर्मकांड को बताता है
कल्प का अर्थ है: विधान (तरीका)
कल्प के 4 भाग हैं

- श्रौत सूत्र: वैदिक यज्ञों की प्रक्रिया
- गृह्य सूत्र: व्यक्तिगत एवं पारिवारिक कर्मकांड
  - विवाह
  - उपनयन (मुण्डन)
- धर्म सूत्र: धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक कार्य, नियम, कर्तव्य एवं अधिकार
- शुल्व सूत्र: यज्ञवेदिका बनाने की प्रक्रिया रेखागणित की उत्पत्ति

3) व्याकरण - पाणिनी द्वारा रचित अष्टाध्यायी व्याकरण पर रचित प्रथम पुस्तक है इसमें वैदिक एवं लौकिक दोनों संस्कृत संबंधी व्याकरण शामिल है।

> पतंजलि ने अष्टाध्यायी पर टीका लिखा जिसका नाम महाभाष्य है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform

4) ज्योतिष : लगधाचार्य ने वेदांग ज्योतिष ग्रंथ की रचना की

5) निरुक्त : इसकी रचना यास्क द्वारा की गई।
निरुक्त का अर्थ शब्दों की व्युत्पत्ति बताने वाला है।
इसका काम यौगिक शब्दों को सही रूप से समझाना है।

6) छन्द : इसमें पद्य में वेदों का सही उच्चारण है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR